जगीरो

पांच लिटर केरोसीन के लिये
पांच दिन से चक्कर लगाती जगीरो,
इस समय लंबी कतार में खड़ी
कुछ इस तरह से झुक रही है
कि लगता है वह ताकत
जिससे वह एक भेड़िया दुनिया के खिलाफ़
ज़िंदगी भर लड़ी है, आज चुक रही है।

उसकी नज़रें कतार की लंबाई पर नहीं हैं,
उसकी आंखों में एक स्टोव जल रहा है,
स्टोव पर पतीले में चावल उबल रहा है...
...बड़ा चींखता है,
''फ़िर वही उबला चावल बन रहा है?
आज तो हम चावल के साथ दाल भी खायेंगे
वरना हम स्कूल नहीं जायेंगे।''
जगीरो कहती है,
''तू रोज-रोज क्या बकता है?
वही खाना होगा जो घर में पकता है,
हां, आज तेरे लिये मटर पलाव बनाती हूं!
दाल को देसी घी का तड़का लगाती हूं!
बापू से क्यों नहीं कहते हो?
मुझे ही क्यों नोचते हो?''
जगीरो आसपास विलोकती है,
सब की नज़र बचाकर आंख पोंछती है,
'नोचना' जगीरो के लिए एक मात्र एक शब्द नहीं-
उसकी व्यथा-गाथा का मर्म भाव है,
उसकी ज़िंदगी का सबसे गहरा घाव है
जिसे उसने भेड़िये से लेकर खरगोश तक से पाया है
किंतु घर की बूढ़ी दीवार तक से छिपाया है।
इस वक्त भी
वह घाव उसकी आंखों में नहीं है,
उसकी आंखों में सिर्फ़ एक स्टोव जल रहा है,
स्टोव पर चावल उबल रहा है...
बडे का बापू जलभुन रहा है,
जगीरो के लिये गालियां धुन रहा है,
''बिल्ली बूढी हो जाती है,
छीछड़ों के ख्वाब देखने से बाज़ नहीं आती है-
रांड कहीं मटक रही होगी,
किसी से चटक रही होगी!
आज उसको ऐसा चटकाऊंगा,
हड्डियां तोड़ डालूंगा
मांस नोच खाऊंगा...''
जगीरो के शरीर को झटका-सा लगता है
और आंखों में जलता स्टोव भभककर बुझता है
स्टोव बहुत पुराना हो चुका है
न जाने उसका क्या-क्या खो चुका है-
वही है जो इसको जलाती है
एक भेड़िये और चार खरगोशों का खाना बनाती है,
भेड़िया फ़िर भी गुर्राता है, खरगोशों को डराता है,
उसका मांस नोच-नोच खाता है।
भीड़ डिब्बा-दर-डिब्बा आगे सरकती है
लेकिन जगीरो अपनी जगह पर खड़ी रहती है,
आज घर नहीं जायेगी,
स्टोव नहीं जलायेगी।
सहसा भीड़ में एक हलचल-सी होती है,
कतार से खड़ी एक बच्ची रोती है-
उसका डिब्बा किसी ने उठा लिया है,
उसके भाई को पीट कर भगा दिया है
जगीरो बच्ची को गोद में उठाती है,
उसके गालों को सहलाती है,
''सुन, छोटी जगीरो के दुख छोटे होते हैं,
बड़ी जगीरो के दुख बहुत-बहुत बड़े होते हैं।''
बच्ची की रोती आंखों में
एक चमक-सीकौंध जाती है
जब जगीरो मजबूत हाथों से
अपने डिब्बे को आगे सरकाती है
और उसकी आंखों में
कई स्टोव एक साथ जल उठते हैं।

कुमार विकल की कविता

हिन्दी दिवस का पाखंड

Seasonal rhinitis को आपके बच्चे ऋतुनिष्ठ नासाशोथ बोलें, tonsillitis को गलतुंडिकाशोथ बोलें, यही है हिंदी दिवस। यह हिंदी का मरण/रुदन दिवस है।

जनता साल भर हिंदी बोलती है, सरकारी लोगों को एक दिन हिंदी याद आती है। जिन्होंने शब्दकोशों का निर्माण किया है, उन विद्वानों के बच्चे उन हिंदी शब्दों/पदों को बोलना तो छोड़िए, उनका उच्चारण भी शुद्ध कर दें, बड़ी बात होगी। हिंदी के सरकारी प्रकांडों ने हिंदी की ऐसी-तैसी की है। अपने बच्चों को हिंदी साहित्य पढ़ाएँ, हिंदी में बोलें, घर में बनाना, ऐपल की जगह केला, सेब बोलें, थर्टी फाइव, थर्टी सिक्स की जगह पैंतीस, छत्तीस बोलें, भोजपुरी में बोलें, कुमाऊँनी में बोलें, आदि-आदि, घर में अपनी मातृभाषा का प्रयोग करें।

लेकिन यदि सुविधा है तो अपने बच्चे को अंग्रेज़ी सीखने के लिए प्रेरित करें। पाखंडियों से बचें। सबके बच्चे अंग्रेज़ी स्कूलों में पढ़ते हैं। हिंदी कहीं नहीं मर रही, हिंदी जवान है। मरी भाषा संस्कृत में अनुकूलन से इनकार कर रही है, अंग्रेज़ी के शब्दों को अपने में समेट रही है, बह रही है, इठला रही है। मर्सिया गाने का बजट होता है, हिंदी दिवस मनाने के पैसे दिए जाते हैं। उन्हें पाखंड करने दें, आप जीएँ, एहसासे कमतरी से मुक्त हों, हिंदी मीडियम में पढ़कर अंग्रेज़ी सीखकर आगे बढ़ने वाले लड़के-लड़कियाँ जगह-जगह अपने झंडे गाड़ रहे हैं।

पेंशन, बीमा, सब सेट कर हिंदी बचाओ, देश बचाओ, क्रांति बचाओ आदि-आदि रुदन में जिनको सुख आता है, उन्हें वह सुख लेने दें। उन पर झल्लाना भी क्या। उदार बनें।

– ललित सती

सत्ता की भाषा हिन्दी ?

सबसे पहली बात हिंदी-प्रदेश एक मिथक है। दूसरी बात हिंदी एक अल्पसंख्यक भाषा है। तीसरी बात हिंदी अन्य उत्तर-भारतीय भाषाओं के विकास में सबसे बड़ी बाधा है (या बना दी गयी है).चौथी बात ज्ञान के न्यायपूर्ण वितरण और सर्वसुलभ पहुँच के लिए जरूरी है हिन्दी का वर्चस्व टूटे।

आज की हिंदी सत्ता के खुमार में ग्रस्त एक बीमार भाषा बन चुकी है जो कंप्यूटर को संगड़क कहती है। हिन्दी की जिम्मेदारी है वह स्वयं को मुक्त करे और अंधकार में धकेल दी गयी अन्य उत्तर-भारतीय भाषाओं की मदद करे। विभागीय जोड़-तोड़, प्रकाशकीय मोल-तोल और सत्ता व बाजार की भाषा मात्रा बन यह सुन्दर भाषा अपनी चमक खोती जा रही है जिसके साहित्य में बिरले कोई जुगनू अपनी चमक बिखेर जाता है। हिंदी दिवस के बजाय भारतीय भाषा दिवस बनाया जाय या फिर उत्तर -भारत की भाषाओं का दिवस मनाया जाय। मठाधीशों के दफ्तरों में कैद हो जाने वाली हिंदी तेरा नाश हो!

सूफियों की शायरी, संतो की वाणी और देशज भारतीय बाजार के बढ़ते दायरे के साथ जो खड़ी बोली इस पूरे भूखंड की संपर्क भाषा बनी थी और जिसे भारतीय मनुष्यता की भाषा बनकर सत्ता की भाषा से लड़ना था, वह खुद सत्ता की भाषा बन गयी. जो व्यवहार दो सदियों से उसके साथ हुआ वही उसने अन्य भाषाओं, खासकर उत्तर भारतीय भाषाओं के साथ करना शुरू किया. यह अब भी बदस्तूर जारी है.

– संदीप सिंह

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब